

তিঙ্ত-প্রকরণ

ধাতুর উত্তর তিঙ্-বিভক্তি-যোগে তিঙ্ত (finite verb, সমাপিকা ক্রিয়া) পদ গঠিত হয়। সংস্কৃতভাষায় তিঙ্ত ক্রিয়াপদ যেমন ধাতুর অর্থ প্রকাশ করে, তেমনই সেই সঙ্গে বাচ্য (voice), কাল (present, past অথবা future), পুরুষ (person) এবং সংখ্যাও (number—singular, dual অথবা plural) বুঝায়। যেমন ‘বিড়ালঃ দুগ্ধং পিবতি’—এই বাক্যে আমি, তুমি ভিন্ন তৃতীয় একটিমাত্র বিড়াল বর্তমান কালে দুগ্ধপান ক্রিয়া নিষ্পন্ন করিতেছে। বাক্যটিতে ‘পিবতি’ ক্রিয়াপদটি কর্তৃবাচ্যে প্রযুক্ত হওয়ায় পানক্রিয়া নিষ্পাদনে বক্তা বিড়ালের প্রাধান্য প্রকাশ করিতেছেন—‘স্বতন্ত্রঃ কর্তা’। সেই সঙ্গে ‘পা’ ধাতুর উত্তর তিঙ্-বিভক্তিদ্বারা ‘পিবতি’ পদটি বর্তমানকাল, প্রথমপুরুষ ও একবচনও বুঝাইতেছে।

পাণিনিমতে ‘পুরুষ’ ও ‘বচন’ ভেদে তিঙ্-বিভক্তি মাত্র ১৮টি—পরস্মৈপদে ৯টি ও আত্মনেপদে ৯টি :—

পরস্মৈপদ				আত্মনেপদ			
পুরুষ-Person				পুরুষ-Person			
	প্রথম	মধ্যম	উত্তম		প্রথম	মধ্যম	উত্তম
	Third	Second	First		Third	Second	First
একবচন	তিপ্	সিপ্	মিপ্	একবচন	ত	থাস্	ইট্
দ্বিবচন	তস্	থস্	বস্	দ্বিবচন	আতাম্	আথাম্	বহিঙ্
বহুবচন	ঝি	থ	মস্	বহুবচন	ঝ	ধবম্	মহিঙ্
	(= অস্তি)				(=অস্ত)		

এই ১৮টি লট্ (Present tense) এর বিভক্তি। আবশ্যিকমত ইহাদের স্থানে আদেশ বা পরিবর্তন করিয়া সংস্কৃতে দশটি লকারের মোট বিভক্তিসংখ্যা ১৮০।

‘তিঙ্’ একটি প্রত্যাহার—পরস্মৈপদের প্রথম বিভক্তি ‘তিপ্’-এর আদি ‘তি’ ও আত্মনেপদের শেষ বিভক্তি ‘মহিঙ্’-এর অন্ত্য ‘ঙ্’কে লইয়া ‘আদিরন্ত্যেনসহেতা’ এই সূত্রানুসারে গঠিত। ‘তিঙ্’ প্রত্যাহার লটের এই ১৮টি বিভক্তি ও তাহাদের স্থানীয় অন্য সমস্ত সমাপিকা ক্রিয়াবাচক বিভক্তিগুলিকে বুঝায়।

কেবলমাত্র আত্মনেপদের বিভক্তিগুলিকে বুঝাইবার জন্য আর একটি প্রত্যাহার আছে—‘তঙ্’। এটিও পূর্বের ন্যায় আত্মনেপদের প্রথম ‘ত’ বিভক্তির আদি ‘ত’ এবং সর্বশেষ ‘মহিঙ্’ এর অন্ত্য ‘ঙ্’কে লইয়া গঠিত। অতএব তঙ্ বলিলে সমস্ত আত্মনেপদের বিভক্তিগুলিকে বুঝায়।

সংস্কৃতে ধাতুগুলি দশটি গণে (Groups) বিভক্ত। যথা—

ভাদ্যাদাদী জুহোত্যাদির্দিবাদিঃ স্বাদিরেব চ।

তুদাদিশ্চ রুধাদিশ্চ তন-ক্র্যাদি-চুরাদয়ঃ ॥

তিঙ্ বিভক্তিগুলি আবার ‘দশটি লকারে’ বিভক্ত—লট্, লোট্, লঙ্, বিধিলিঙ্, লৃট্, লিট্, লুট্, লুঙ্, আশীর্লিঙ্ ও লৃঙ্। ইহাদের মধ্যে লট্, লোট্, লঙ্ ও বিধিলিঙ্কে এক ‘চতুর্লকার’ বলা হয়।

এক্ষণে ‘অ’-কারাদিক্রমে সমধিক প্রচলিত কতকগুলি ধাতুর রূপ প্রদর্শিত হইতেছে।

अथ भ्वादिप्रकरणम्

भू सत्तायाम् = होना (परस्मैपदी)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष
(लट्)	भवति	भवतः	भवन्ति	प्र०
	भवसि	भवथः	भवथ	म०
	भवामि	भवावः	भवामः	उ०
(लिट्)	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः	प्र०
	बभूविथ	बभूवथुः	बभूव	म०
	बभूव	बभूविव	बभूविम	उ०
(लुट्)	भविता	भवितारौ	भवितारः	प्र०
	भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ	म०
	भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः	उ०
(लृट्)	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति	प्र०
	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ	म०
	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः	उ०
(लोट्)	भवतु, भवतात्	भवताम्	भवन्तु	प्र०
	भव, भवतात्	भवतम्	भवत	म०
	भवानि	भवाव	भवाम	उ०
(लङ्)	अभवत्	अभवताम्	अभवन्	प्र०
	अभवः	अभवतम्	अभवत	म०
	अभवम्	अभवाव	अभवाम्	उ०

(वि.लि.) भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	प्र०
भवेः	भवेतम्	भवेत	म०
भवेयम्	भवेव	भवेम	उ०
(आ.लि.) भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः	प्र०
भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त	म०
भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म	उ०
(लुङ्) अभूत्	अभूताम्	अभूवन्	प्र०
अभूः	अभूतम्	अभूत	म०
अभूवम्	अभूव	अभूम	उ०
(लृङ्) अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्	प्र०
अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत	म०
अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम	उ०

कृ = करना (परस्मैपदी)

(लट्)	करोति	करुतः	कर्वन्ति	प्र०
	करोसि	करुथः	करुथ	म०
	करोमि	कुर्वः	कुर्मः	उ०
(लिट्)	चकार	चक्रतुः	चक्रुः	प्र०
	चकर्थ	चक्रथुः	चक्र	म०
	चकार, चकर	चकृव	चकृम	उ०
(लुट्)	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः	प्र०
	कर्तासि	कर्तास्थः	कर्तास्थ	म०
	कर्तास्मि	कर्तास्वः	कर्तास्मः	उ०
(लृट्)	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति	प्र०
	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ	म०
	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः	उ०
(लोट्)	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु	प्र०
	कुरु, तात्	करुतम्	कुरुत	म०
	करवाणि	करवाव	करवाम	उ०

(लङ्)	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्	प्र०
	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत	म०
	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म	उ०
(वि.लि.)	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः	प्र०
	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात	म०
	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम	उ०
(आ.लि.)	क्रियात्	क्रियास्ताम्	क्रियासुः	प्र०
	क्रियाः	क्रियास्तम्	क्रियास्त	म०
	क्रियासम्	क्रियास्व	क्रियास्म	उ०
(लृङ्)	अकार्षीत्	अकार्षाम्	अकार्षुः	प्र०
	अकार्षीः	अकार्षम्	अकार्ष	म०
	अकार्षम्	अकार्ष	अकार्ष	उ०
(लृङ्)	अकरिष्यत्	अकरिष्यताम्	अकरिष्यन्	प्र०
	अकरिष्यः	अकरिष्यतम्	अकरिष्यत	म०
	अकरिष्यम्	अकरिष्याव	अकरिष्याम	उ०

गम् = जाना (परस्मैपदी)

(लट्)	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति	प्र०
	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ	म०
	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः	उ०
(लिट्)	जगाम	जगमतुः	जग्मुः	प्र०
	जगामिथ, जगन्थ	जगमथुः	जगम	म०
	जगाम, जगम	जगिमव	जगिमम	उ०

		गन्तारौ	गन्तारः	प्र०
(लृट्)	गन्ता	गन्तास्थः	गन्तास्थ	म०
	गन्तासि	गन्तास्वः	गन्तास्मः	उ०
	गन्तास्मि	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति	प्र०
(लृट्)	गमिष्यति	गमिष्यथः	गमिष्यथ	म०
	गमिष्यसि	गमिष्यावः	गमिष्यामः	उ०
	गमिष्यामि	गच्छताम्	गच्छन्तु	प्र०
(लोट्)	गच्छतु, तात्	गच्छतम्	गच्छत	म०
	गच्छ, तात्	गच्छाव	गच्छाम	उ०
	गच्छानि	अगच्छताम्	अगच्छन्	प्र०
(लङ्)	अगच्छत्	अगच्छतम्	अगच्छत	म०
	अगच्छः	अगच्छाव	अगच्छाम	उ०
	अगच्छम्	गच्छेताम्	गच्छेयुः	प्र०
(वि.लि.)	गच्छेत्	गच्छेतम्	गच्छेत	म०
	गच्छेः	गच्छेव	गच्छेम	उ०
	गच्छेयम्	गम्यास्ताम्	गम्यासुः	प्र०
(आ.लि.)	गम्यात्	गम्यास्तम्	गम्यास्त	म०
	गम्याः	गम्यास्व	गम्यास्म	उ०
	गम्यासम्	अगमताम्	अगमन्	प्र०
(लुङ्)	अगमत्	अगमतम्	अगमत	म०
	अगमः	अगमाव	अगमाम	उ०
	अगमम्			

(लृङ्)	अगमिष्यत्	अगमिष्यताम्	अगमिष्यन्	प्र०
	अगमिष्यः	अगमिष्यतम्	अगमिष्यत	म०
	अगमिष्यम्	अगमिष्याव	अगमिष्याम	उ०

सेव् = सेवा करना (आत्मनेपदी)

(लट्)	सेवते	सेवेते	सेवन्ते	प्र०
	सेवसे	सेवेथे	सेवध्वे	म०
	सेवे	सेवावहे	सेवामहे	उ०
(लिट्)	सिषेवे	सिषेवाते	सिषेविरे	प्र०
	सिषेविषे	सिषेवाथे	सिषेविध्वे	म०
	सिषेवे	सिषेविवहे	सिषेविमहे	उ०
(लुट्)	सेविता	सेवितारौ	सेवितारः	प्र०
	सेवितासे	सेवितासाथे	सेविताध्वे	म०
	सेविताहे	सेवितास्वहे	सेवितास्महे	उ०

(लृट्)	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते	प्र०
	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे	म०
	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे	उ०
(लोट्)	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्	प्र०
	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्	म०
	सेवै	सेवावहै	सेवामहै	उ०
(लङ्)	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त	प्र०
	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्	म०
	असेवे	असेवावहि	असेवामहि	उ०
(वि.लि.)	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्	प्र०
	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्	म०
	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि	उ०
(आ.लि.)	सेविषीष्ट	सेविषीयास्ताम्	सेविषीरन्	प्र०
	सेविषीष्ठाः	सेविषीयास्थाम्	सेविषीध्वम्	म०
	सेविषीय	सेविषीवहि	सेविषीमहि	उ०
(लुङ्)	असेविष्ट	असेविषाताम्	असेविषत	प्र०
	असेविष्ठाः	असेविषाथाम्	असेविध्वम्	म०
	असेविषि	असेविष्वहि	असेविष्महि	उ०
(लृङ्)	असेविष्यत	असेविष्येताम्	असेविष्यन्त	प्र०
	असेविष्यथाः	असेविष्येथाम्	असेविष्यध्वम्	म०
	असेविष्ये	असेविष्यावहि	असेविष्यामहि	उ०

दा = काटना (परस्मैपदी)

(लट्)	दाति	दातः	दान्ति	प्र०
	दासि	दाथः	दाथ	म०
	दामि	दावः	दामः	उ०
(लिट्)	ददौ	ददतुः	ददुः	प्र०
	ददिथ, ददाथ	ददथुः	दद	म०
	ददौ	ददिव	ददिम	उ०
(लुट्)	दाता	दातारौ	दातारः	प्र०
	दातासि	दातास्थः	दातास्थ	म०
	दातास्मि	दातास्वः	दातास्मः	उ०
(लृट्)	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति	प्र०
	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ	म०
	दास्यामि	दास्यावः	दास्यामः	उ०
(लोट्)	दातु, दातात्	दाताम्	दान्तु	प्र०
	दाहि, दातात्	दातम्	दात	म०
	दानि	दाव	दाम	उ०
(लङ्)	अदात्	अदाताम्	अदुः, अदान्	प्र०
	अदाः	अदातम्	अदात	म०
	अदाम्	अदाव	अदाम	उ०

(वि.लि.) दायान्	दायानाम्	दायुः	प्र०
दायान्	दायानाम्	दायान्	म०
दायान्	दायान्	दायान्	उ०
(आ.लि.) दायान्	दायानाम्	दायान्	प्र०
दायान्	दायानाम्	दायान्	म०
दायान्	दायान्	दायान्	उ०
(लुङ्) अदासीत्	अदासिष्टाम्	अदासिषुः	प्र०
अदासीः	अदासिष्टम्	अदासिष्ट	म०
अदासिषम्	अदासिष्व	अदासिष्व	उ०
(लृङ्) अदास्यत्	अदास्यताम्	अदास्यन्	प्र०
अदास्यः	अदास्यतम्	अदास्यत	म०
अदास्यम्	अदास्याव	अदास्याम	उ०

शु = सुनना (परस्मैपदी)

(लट्)	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति	प्र०
	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ	म०
	शृणोमि	शृणुवः शृण्वः	शृणुमः, शृण्मः	उ०
(लिट्)	शुश्राव	शुश्रुवतुः	शुश्रुवुः	प्र०
	शुश्रोथ	शुश्रुवथुः	शुश्रुव	म०
	शुश्राव, शुश्रव	शुश्रुव	शुश्रुम	उ०
(लुट्)	श्रोता	श्रोतारौ	श्रोतारः	प्र०
	श्रोतासि	श्रोतास्थः	श्रोतास्थ	म०
	श्रोतास्मि	श्रोतास्वः	श्रोतास्मः	उ०
(लृट्)	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति	प्र०
	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ	म०
	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः	उ०

(लोट्)	शृणोतु, तात् शृणु, तात् शृणवानि	शृणुताम् शृणुतम् शृणवाव	शृण्वन्तु शृणुत शृणवाम	प्र० म० उ०
(लङ्)	अशृणोत् अशृणोः अशृणवम्	अशृणुताम् अशृणुतम् अशृणुव, अशृण्व	अशृण्वन् अशृणुत अशृणुम, अशृण्म	प्र० म० उ०
(वि.लि.)	शृणुयात् शृणुयाः शृणुयाम्	शृणुयाताम् शृणुयातम् शृणुयाव	शृणुयुः शृणुयात शृणुयाम	प्र० म० उ०
(आ.लि.)	श्रूयात् श्रूयाः श्रूयासम्	श्रूयास्ताम् श्रूयास्तम् श्रूयास्व	श्रूयासुः श्रूयास्त श्रूयास्म	प्र० म० उ०
(लुङ्)	अश्रौषीत् अश्रौषीः अश्रौषम्	अश्रौष्टाम् अश्रौष्टम् अश्रौष्व	अश्रौषुः अश्रौष्ट अश्रौष्म	प्र० म० उ०
(लृङ्)	अश्रोष्यत् अश्रोष्यः अश्रोष्यम्	अश्रोष्यताम् अश्रोष्यतम् अश्रोष्याव	अश्रोष्यन् अश्रोष्यत अश्रोष्याम	प्र० म० उ०

১. ত্বেতি -

৬-জহাম্মা

- 'জহাম্মা বাতবঃ' অর্থে জহাম্মাতের ৬-স্ব জ্ঞান হয়।

৬-এচ্

- বর্তমানে এচ্ জুড়ে দ্বিগুণ বর্তমানে যে ক্ষিমা হয় তেজ ক্ষিয়ার বাচক স্বাক্ষর জামে এচ্ প্রত্যয় হয়।

২-অন্তর্ - জহাম্মাতের এচ্-এর ট-এর স্বতন্ত্র জ্ঞান হয়। এ-কারের অ-কারটি ঐপদেশে ছুর্ণামিক ইচ্ - জহাম্মাতের ইচ্ জ্ঞান হয়।

৩- তজ্য গোপঃ - জহাম্মাতের ইচ্ ত-এ গোপ হয়।

৬-এ

এঃ কর্ণি চ জাবে চাকরকৈত্রঃ - জহাম্মাতের এ-কারের অকরক ৬-স্বাক্ষরিত কর্ণ জামে জেজেছে।

তিমতজ্যাক্ষিপম্মজ্জ্বরিবৃজ্জাতান্বাখাখাখা - স্বীকৃত্ব বারি বারি - জহাম্মাতের এ-কারের দ্বারা তিম্ তজ্ মি প্রকৃতি ২৬-টি প্রত্যয়ের আচরণ হয়।

এঃ পরদ্বৈপদ্য - জহাম্মাতের 'এ' কারের দ্বারা প্রাপ্ত ২৬ প্রকার প্রত্যয়ের পরদ্বৈপদ জ্ঞান হয়েছিল।

শেষাৎকর্তরি পরদ্বৈপদ্য - জহাম্মাতের জাম্মা-পদের নিরিঙে তির স্বাক্ষর ইতর কর্বাচে বিরিঙে 'এ'-কারের দ্বারা পরদ্বৈপদ্য প্রকৃতি তিম্ তজ্ মি ইত্যাদি নয়টি প্রত্যয় প্রাপ্ত হয়েছিল।

‘তিউজ্জীনি সীনি প্রমথস্বর্গদ্বাভাঃ’ - অশ্রু দ্বারা তিউ
-এর তিউ তিউ অশ্রুদ্বয়ের প্রকৃষ্ণাঃ প্রমথ স্বর্গ
ও ষট্ঠম পুরুষ অশ্রুতা রয়েছে।

তাদেশক বসায়িবচনবহুবচনোচ্চেক্ষাঃ - অশ্রু দ্বিমে প্রমথ
স্বর্গত্ব ও ষট্ঠম পুরুষ অশ্রুতা প্রাপ্ত তিউ তজ
সি জাতি তিউ তিউ অশ্রুদের অর্থে এক পুরুষের
করুণাঃ একবচন, দ্বিবচন, বহুবচন অশ্রুতাঃ।

তোমে প্রমথঃ - অশ্রুত্বজাতের স্বর্গত্ব ও ষট্ঠম পুরুষ
-এর নিশ্চিত সুস্বাদু, অশ্রুত্ব তেমনে তিউ পদ
ধেনপদে আকায় স্বাদুর অশ্রু প্রমথ স্বর্গত্ব অশ্রুত্ব
তিউ তজ্, সি প্রাপ্ত হল।

৬ তিউ
দেহকয়োদ্বি বচনকবচন - অশ্রু দ্বিমে একমেত বিজ্ঞাস
একবচন অশ্রুত্ব প্রত্যয় তিউ হল।

৬ তিউ
‘ইলাশ্রুত্ব’ - অশ্রু দ্বিমে দ্বারা তিউ-পত প-এর
ইউ অশ্রুতা হল অশ্রু. ‘তজ্ লোপঃ’ - অশ্রু
দ্বিমে -এর লোপ হল।

৬ তি
‘তিউজ্জিত্ জাব্বীকর’ - অশ্রু দ্বিমে তিউ-জি
ইউয়ার কারণে জাব্বীকর অশ্রুতা প্রাপ্ত হল।

৬ ঞপ্ তি
‘কর্তরি ঞপ্’ - অশ্রুদ্বারা কর্তবাচি জাব্বীকর
আকায় ঞপ্ -এর উভয় হল।

৬ ঞা তি
ইলাশ্রুত্ব - অশ্রু দ্বারা ‘প’ -এর ইউ অশ্রুতা হল
অশ্রু. ‘লক্ষকৃতদ্বিভে’ - অশ্রু দ্বিমে কৃষ্ণে ঞা -
কারটির ইউ অশ্রুতা প্রাপ্ত হল অশ্রু. ‘তজ্ লোপঃ’
অশ্রু দ্বারা তাদের লোপ হল।

৬ ঞা তি
জাব্বীকর কার্তবীকরোঃ - অশ্রু দ্বারা জাব্বীকর
প্রত্যয় ঞপ্ পরে আকায় ইলাশ্রুত্ব জাব্বীকর
হল।

‘হাশ্রুত্বরত্নঃ’ - অশ্রুদ্বিমে ঞা-কারের জাব্বীকর
স্বর্গত্ব প্রাপ্ত হল।

১. জ্ব জ ঙি অচেহ্নস্বায়ঃ - জ্ঞে দ্বিমে জ্ পত্রে
 আকায় সমাজ্য-অব্রহ্মদক্ষঃ স্থানম্ সেই
 পরিভাস্য জ্ঞানমায়ী জ্ (৩) - স্বঃ দ্বাণে জ্ব
 জ্ঞানেশ্ব হণ।
 = ধ্বনি
 জ্ঞ-রিতা করে তেতি পদটি জিদ্ধ হণ।

২. তেভঃ
 জ্ঞ জ্ঞানায়
 জ্ঞ ণে

দেবানামো ঋতবঃ
 বর্তমানো ণে

৩. জ্ঞ দেবকনো দ্বিবচনৈকবচনে - জ্ঞানজ্ঞানের দ্বিভেদ
 বিবজায় দ্বিবচনজ্ঞাতক পুত্রম্ 'জ্ঞ' প্রণে।
 হুণস্তম্ - জ্ঞ-কারে ইচ্ জ্ঞা
 জ্ঞ হোপঃ - জ্ঞে দ্বিমে তার হোপ বজ্ঞার
 কমা হিষ্ কিস্ত পুত্রোহন জিদ্ধির স্বয়
 'ন' বিভক্তো হুদ্রাঃ - জ্ঞে দ্বারা 'জ'-এর হোপ
 নিষেধ হুয়েছে।

৪. জ্ঞ জ্ঞানায় কঠরি জ্ঞ
 জ্ঞ জ্ঞ হুণস্তম্, ণাক্কতক্ষিণে . জ্ঞ হোপঃ

৫. জ্ঞ জ্ঞ জ্ঞ জ্ঞানায় কঠরি জ্ঞানায়, জ্ঞানায় হুণস্তম্

৬. জ্ব জ্ব জ্ব অচেহ্নস্বায়ঃ
 জ্ব জ্ব জ্ব জ্ব জ্ঞমো রুঃ - জ্ঞানজ্ঞানের জ-কারে জ্ঞ জ্ঞম
 এই হুণি জ্ঞানায় রু-এর জ্ঞান হণ।

৭. জ্ব জ্ব জ্ব জ্ঞানায় কঠরি জ্ঞানায় হুণস্তম্
 বিরাগেহবজ্ঞানম্ - জ্ঞে দ্বারা জ্ঞান জ্ঞা
 হুয়েছে।

৮. জ্ব জ্ব জ্ব জ্ঞানায় কঠরি জ্ঞানায় হুণস্তম্
 জ্ঞানায় যদি তেরফ বা র আকে জ্ঞান
 জ্ঞান তেরফ বা র (বিজ্ঞান) জ্ঞান হণ।
 = ধ্বনি
 জ্ঞ-রিতা করে হেতঃ রূপটি জিদ্ধ হণ।

* তাল্পেকবচনধিবচনবহুবচনাল্পেকতাঃ
শেষে পক্ষঃ

- ৬ ঐ বি বহু বহুবচন - জ্ঞানজ্ঞানের বহুবচন বিবচন বহুবচন-
 জ্যঙ্ক প্রত্যয় কি লোপ।
ত্ৰিঙ্গিত্ জার্বীহুক
- ৬ ঐ ঞ্ ঞি কঠরি ঞ্
- ৬ ঐ জ ঞি হৃলক্ষ্য, লক্ষ্যকৃতক্ৰিতে, তজ্জ লোপঃ
- ৬ ঐ জ ঞি জার্বীহুকাক্ৰীহুকয়োঃ, শ্চাণ্ডেহস্তরত্নঃ
- ৬ ঐ জ ঞ ঞি অচোহুম্বায়াবঃ
- ৬ ঐ জ ঞ ঞি কোহুক্তঃ - জ্ঞানজ্ঞানের বা-য়ু শ্চাণ্ডে জন্ত জ্ঞানো
 হল।
- ৬ ঐ জ ঞ ঞি অতোহুলে- অদন্ত জ্ঞানের পর যদি ঞ্ ঞ ঞাকে
 ঞ্চলুম্বর শ্চাণ্ডে পররূপ প্রকাশ্য হবে।

= বৈশি
 *

মুম্ব্রহুপমতে জ্ঞানার্থিকরনে দু্যনিত্বপি বর্ধিত্বঃ -

- ৬ ঐ ঞি জ্ঞানজ্ঞানের বর্ধিত্ব পুরুষ
- ৬ ঐ ঞি দ্বৈকলোম্বিবচনকবচো - অদে দ্বিমে বহুবচন বিবচন
 ঞিবচন জ্যঙ্ক প্রত্যয় ঞি লোপ।
- ৬ ঐ ঞি হৃলক্ষ্য, তজ্জ লোপঃ, ত্ৰিঙ্গিত্ জার্বীহুক
- ৬ ঐ ঞ্ ঞি কঠরি ঞ্
- ৬ ঐ জ ঞি হৃলক্ষ্য, লক্ষ্যকৃতক্ৰিতে, তজ্জ লোপঃ
- ৬ ঐ জ ঞ ঞি জার্বীহুকাক্ৰীহুকয়োঃ
- ৬ ঐ জ ঞ ঞি শ্চাণ্ডেহস্তরত্নঃ
- ৬ ঐ জ ঞ ঞি অচোহুম্বায়াবঃ

= অপারি = অনিত্য করে বৈশি রূপা ঞি ঞি হলে।

৩) বেত্র

ক্ অত্রায়াম্ ক্ বাচনো যাতবঃ
 ক্ ওর্ বর্চন্যানে ওর্
 ক্ ও ইত্যন্তম্ , ইন ---
 ওঃ ---
 তিন্ ---
 ওঃ ---
 কোম্যৎ ---
 তিত্গ্নী ---
 অন্ত্যক ---
 ক্ থ বহম্ বহবচনম্ - বহম্ বহম্ বিকাস - বহবচনম্
 প্ৰত্নম্ ম্ এণ।
 তিত্গ্নী ---
 ক্ ঞপ্ ম্ কর্রি --- , ইত্যন্তম্ , ওষ্যৎ --- , ইত্যন্তম্ - ত্তা
 ক্ ও ম্ , ইত্যন্তম্ , ওষ্যৎ --- , ইত্যন্তম্ - ত্তা
 ক্ ও ম্ জাবর্ধে --- - দ্বারা ইত্যন্ত অত্যন্ত ইন ইম্ ও ইম্
 . অগ্ণহৃত্তম্ :
 ক্ ওব ওম্ অগ্ণহৃত্তম্ :
 = ঞপথ = জ্ঞপিতা করে বেত্র রূপটি সিক হলে।

১) ত্ৰেবাষি

ক্ অত্রায়াম্ ক্ বাচনো যাতবঃ
 ক্ ওর্ বর্চন্যানে ওর্
 ক্ ও ইত্যন্তম্ , ইন --- , ত্তা জ্ঞপঃ
 ওঃ কর্নি --- - জ্ঞপ দ্বারা ওঃ জ্ঞপক ক্ ইত্যন্ত
 কর্টি জ্ঞপম্ এতৎক্।
 ক্ ঝিন্ নত্নত্জাম্ --- দ্বারা 'ও' দ্বারা ঝিন্ প্ৰত্নম্ যুক্ত হলে।
 তিত্গ্নীম্ --- - ইত্যন্ত প্ৰকৃষ অক্ষা ইত্যন্ত এণ।
 অগ্ণহৃত্তম্ : - জ্ঞপ দ্বারা ইত্যন্ত প্ৰকৃষ অর্থে ঝিন্
 ইত্যন্ত।
 অন্ত্যক --- - দ্বারা বহবচন ইত্যন্ত।
 ক্ ঞপ্ ঝিন্ তিত্গ্নীত্জাব --- - জ্ঞপজ্ঞপের ঝিন্-এর আর্ধিক
 অক্ষা ইত্যন্ত। কর্রি ঞপ - দ্বারা ঞপ জ্ঞপ
 ইত্যন্ত।
 ক্ ও ঝিন্ ওষ্যৎকর্টি - দ্বারা 'ও' এণ. 'ইত্যন্তম্' এই জ্ঞপ দ্বারা
 প্-এর ইৎ অক্ষা ইম্ এণ. ত্তা জ্ঞপঃ ---

ব্ৰহ্ম জ্ঞান আশ্রয় চৰ্চ - অসামান্য অসাধাৰণ 'ঈশ্বৰ' স্থাপিত
 চৰ্চ ৩ ইয়া আদৰ্শ হয়।
 অৰ্থাৎ '৫' টি ইয়া আদৰ্শ হয় (৫) ইয়া আদৰ্শ
 = ব্ৰহ্ম = অগ্ৰহিত কৰে ব্ৰহ্মৰ পদাৰ্থ জিন্স বুল।

২) ব্ৰহ্মবস্তু:

১ জন্মানাম্

২ নিশিচ্

৩ ল্

৪ তন্

চৰ্চকমো বিবচনৈকতলো - দিব্ৰেৰ বিচাৰন বিচৰণ
 প্ৰথম তন্, লো।

পৰৱৰ্ত্তমানমাত্ৰ ব্ৰহ্ম... - তিব, তন্, সি প্ৰতি
 ৩ টি প্ৰত্যয়ৰ জ্ঞান বিচাৰনঃ বিচৰন জাৰ্জক প্ৰত্যয়
 'তন্' লো।

৫ তন্

৬ ব্ৰহ্ম তন্ ইবো ব্ৰহ্ম.....

৭ ব্ৰহ্ম তন্ ইত্যন্ত, ইত্যন্তে....., তন্ লোপঃ

৮ ব্ৰহ্ম ব্ৰহ্ম তন্

৯ ব্ৰহ্ম ব্ৰহ্ম তন্

১০ ব্ৰহ্ম ব্ৰহ্ম তন্

১১ ব্ৰহ্ম ব্ৰহ্ম তন্

ব্ৰহ্ম ব্ৰহ্ম তন্ (অজহ্মমো ব্ৰ - অজহ্মমি অ-কাৰ জ্ঞান
 আদৰ্শ হয়।

ব্ৰহ্ম ব্ৰহ্ম তন্ঃ স্বৰূপজ্ঞানো বিচৰণঃ - স্বৰূপ জ্ঞান বিচাৰন যদি
 তৰ্ক বা তৰ্ক মাত্ৰক অতুল অৱৈ তৰ্ক মাত্ৰ
 বিচৰণ আদৰ্শ হয়।

জ্ঞানো ব্ৰহ্ম - অদন্ত অদন্ত পৰ যদি ইন পৰ
 ইত্যন্ত জ্ঞান পৰৱৰ্ত্তমান তদাৰ্শ হয়।

- ② তেবতাম্
- ক্‌ পোচ্
- ক্‌ ও
- ক্‌ ওজ্
- ক্‌ মপ্‌ ওজ্
- ক্‌ ও ওজ্
- তো ও ওজ্
- ক্‌ ওজ্‌ ও ওজ্

ক্‌ ওজ্‌ ও ওজ্‌ - পোচ্‌-একার্ষিকৈ পোচ্‌ প্ৰে অম্মা
 মপ্‌ কত্বৈ হ্ম, পিচ্‌-এর তিত্বৈ মপ্‌ কত্বৈ
 তত্ত্বৈম্মাশ্চিনাৎ. তাৎ-জুত্বাঃ - জুত্বাভ্যেতৈ তত্ত্ব-এ
 মপ্‌ জাম্‌ জাম্মে ইৎ.

= শ্রবনাম্

3. তেবন্তু

- ক্‌ কি
- ক্‌ জান্তি
- ক্‌ জন্তু
- তে জন্তু

চুকাহন্তঃ
 বক্রঃ
 জন্তোহ্মণে - সিদ্‌-জিত্বৈ পর হ্মণে মতৈ মাকলৈ
 পরক্রমৈ বক্রমৈ হুৎ।

= শ্রবন্তু

① তে

- ক্‌ পোচ্
- ক্‌ মজ্‌
- ক্‌ জি
- ক্‌ মপ্‌ জি
- ক্‌ ও জি
- তো ও মজ্‌
- ক্‌ ও মজ্‌
- তে জি

জহন্তু লোপ
 জেহ্ম-পিচ্‌ - পোচ্‌-এর জিম্‌ পশুন্‌ মপ্‌ হি জাম্মা
 হ্মণে মপ্‌ জেহ্মি জিম্মিৎ হ্ম।
 জতো হ্মঃ - জকাত্তু জিত্বৈ পর জিম্‌
 মপ্‌ হ্ম হি জাম্মা হ্ম জাম্‌ (হি-ঃ) হ্ম হ্ম।
 বা হ্মজাত্তু জিত্বৈ হ্মণে হি-ম্‌ লোপে ম প্ৰক্‌ হ্ম।

= তে
 = শ্রব

২) বেত্ন

৬ মজ্

৬ জব জ মজ

বে মজ্ প্রোচো পড়বৎ - মজ্ > ত্ন

বেত্ন

= মবানকা

৩) বেভ

৬জ মজ্ ম ঝিপ
৬জ্ ত্ন ৩ গজ্

বে ঝ

বে ৩

প্রোচো পড়বৎ - ম > ৩

১) বেঝি

৬ই ঝিপ

৬ে ঝি

৬ে জা ঝি

৬ে জা ঝি

= মবাননি

৬েঝিঃ - প্রোচ - ৩ ঝিপ - মজ্ ঝি জাচো হলে

জাচো হলে - প্রোচের উত্তর ধরনের ঝি

স্থানীয় জাচো জাচো হলে

অবস্থ প্রোচ > ৩

২) বেব

==

৬ে বজ

৬ে জা বজ

৬ে জা ব

= মবাব

জাচো বজ পি

জিবস্থ প্রোচ

বিজ্ ৩ঃ - বজ-৩ অ-কাচো প্রোচ হলে

অকঃ জাবর্ন দীর্ঘ

৩) মবাক

৬ে মজ

৬ে জা মজ

৬ে জা ম

= মবাক

① भावितासि

- ६ ल
- ६ जिन्
- ६ तजि जिन् अज्जी ---
- ६ तज जि र्ज्ज् > तजित र्ज्कार , र्ज्ज्ज् प
- ६ र्ज् तज जि
- ६ र्ज् तज जि
- हव र् " "
- ६ अर् र् तज जि ताज्ज्कार्ण - अकार्णि प्रथम पठेत् प्राकार्ण
- = त्रिविधासि कार्ण तज्-त् अ-त् लोप र्ण।

② भावितासुः

- ६ तजि अज् अज्जी ---
- ६ तज अज् र्ज्ज् > र् कार्ण लोप
- ६ र्ज् तज अज्
- ६ र् " " र्ज्ज्ज्
- ६ अर् र् तज अज् अज् --- > अ-त् अर्ण र् अकार्ण र्ण
- ६ अर् र् तज अज् त्रिषाञ्ज्कार्ण - द्विषाञ्ज् - अकार्ण अकार्ण र्ण
- ६ अर् र् तज अज् र्ज्ज्कार्ण --- > द्वि-त् र्ज्ज्कार्ण त्रि-त् लोप र्ण
- = त्रिविधासुः र्ज्ज्कार्ण र्ज्ज्कार्ण त्रिषाञ्ज्कार्ण र्ण

③ भाविताश्च

- ६ ल
- ६ श
- ६ तजि श अज्जी ---
- ६ तज् श
- ६ र्ज् तज श
- ६ र् तज श
- ६ अर् र् तज श
- = त्रिविधाश्च

① भाविनास्त्रि

६ ण

६ त्रिन्

६ त्रिं त्रिं त्रिं त्रिं

६ त्रिं त्रिं त्रिं त्रिं

६ त्रिं त्रिं त्रिं त्रिं

६ त्रिं त्रिं त्रिं

६ त्रिं त्रिं त्रिं

= त्रिं त्रिं त्रिं

② भाविनास्त्रिः

६ ण

६ वज्

६ त्रिं त्रिं त्रिं

६ त्रिं त्रिं त्रिं

६ त्रिं त्रिं त्रिं त्रिं

६ त्रिं त्रिं त्रिं त्रिं

६ त्रिं त्रिं त्रिं त्रिं

= त्रिं त्रिं त्रिं

③ भाविनास्त्रिः

६ त्रिं

= त्रिं त्रिं त्रिं